28/January/2019
Amar Ujala

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग में आज से सेमीनार

देवप्रयाग। श्री रघुनाथ कीर्ति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग परिसर में सोमवार से आठ दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमीनार का शुभारंभ होगा। सेमीनार में देश-विदेश के विद्वान व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य, हिंदी व अंग्रेजी आदि विषयों के शोधों पर विचार रखेंगे। संस्थान के प्राचार्य प्रो. केबी सुब्बरायुडु ने बताया कि सोमवार से व्याकरण विभाग का समास सिद्धांत पर दो दिवसीय सेमीनार शुरू होगा। 30 व 31 जनवरी को साहित्य विभाग का संस्कृत में बौद्ध परंपरा का योगदान विषय पर सेमीनार होगा। 1 व 2 फरवरी को ज्योतिष विभाग की अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में विद्वान देववास्तु पर मंथन करेंगे। 3-4 फरवरी को होने वाले आधुनिक विभाग की संगोष्ठी में लोकसंस्कृति, गढ़वाल और कुमाऊं की भाषा व इतिहास आदि पर विमर्श होगा। प्राचार्य ने बताया कि सेमीनार में देश-विदेश के लगभग दो सौ विद्वानों, प्रोफेसरों और शोधार्थियों के पहुंचने की संभावना है। ब्यूरो

28/January/2019
Hindustan

देवप्रयाग में आज से आठ दिवसीय सेमीनार

देवप्रयाग। श्री रघुनाथ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग में सोमवार से आठ दिवसीय राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन होगा। सेमीनार में देश-विदेश से आए वक्ता और शोधार्थी अपने विचार रखेंगे। संस्थान प्राचार्य प्रो. केबी सुब्बरायडु ने बताया कि सोमवार श्री रघुनाथ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग में आठ दिवसीय सेमीनार शुरू होगा। जिसमें 28 व 29 जनवरी को व्याकरण विभाग, 30 व 31 को साहित्य विभाग का संस्कृत में बौद्ध परंपरा योगदान विषय पर सेमीनार होगा। प्राचार्य ने बताया कि सेमीनार में भारत सहित अन्य देशों के लगभग दो सौ सें अधिक प्रो. प्राध्यापक एवं शोधार्थियों के पहुंचने की संभावना है।

30/January/2019
Amar Ujala

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में समास के विकास पर चर्चा

देवप्रयाग। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में आयोजित व्याकरण विभाग की दो दिवसीय संगोष्टी में विद्वानों ने समास के ऐतिहासिक क्रम एवं विकास पर विचार रखे। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के मौके पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से पहुंचे प्रोफेसरों व शोध छात्रों ने 30 शोधपत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए संस्कृत भारती के संगठन मंत्री प्रताप सिंह ने कहा कि प्राध्यापकों को संस्कृत के गूढ़ ज्ञान से नई पीढ़ी को अवगत करवाना चाहिए। कार्यक्रम में मौजूद बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के व्याकरण विभागाध्यक्ष प्रो. ब्रजभूषण ओझा, संस्कृत के वेद व्यास परिसर हिमाचल के साहित्य विभागाध्यक्ष प्रो. विजयपाल शास्त्री व श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग के व्याकरण विभागाध्यक्ष प्रो. बनमाली विश्वाल ने समास संरचना पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य केबी सुब्बारायडु ने कहा कि इस प्रकार के सेमिनार विषय के साथ ही शोधार्थियो के लिये महत्वपूर्ण होते है। इसमौके पर डा. प्रफुल्ल गड़पाल, डा. कृपाशंकर शर्मा, डा. आर बालामुरुगन, डा. अरविंद गौर, डा. सुरेश शर्मा, डा. वीरेंद्र बर्तवाल, डा. शेलेंद्र, डा. दिनेश चंद्र पांडे व डा. नितेश द्विवेदी आदि मौजूद थे।

30/January/2019
Hindustan

देवप्रयाग में अंतर्राष्ट्रीय व्याकरण संगोष्ठी का आयोजन किया

देवप्रयाग। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग में व्याकरण विभाग की दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में आए विद्वानों ने समासों के ऐतिहासिक विकास पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

तीर्थ नगरी देवप्रयाग स्थित रघुनाथ कीर्ति परिसर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय व्याकरण संगोष्ठी का शुभारंभ संस्कृत भारती के संगठन मंत्री प्रताप सिंह ने किया। उन्होंने सभी वक्ताओं व उपस्थित लोगों से संस्कृत के ज्ञान को नई पीढ़ी तक ले जाने का आह्वान किया।

बनारस हिंदू विवि के व्याकरण विभागाध्यक्ष प्रो. बृजभूषण ओझा ने व्याकरण की संरचना पर प्रकाश डाला। कहा कि इस प्रकार के सेमिनार विषय के साथ ही शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। गोष्ठी में विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए प्रोफेसरों व शोध छात्रों ने 30 शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस मौके पर वेदव्यास परिसर हिमाचल के साहित्य विभागाध्यक्ष प्रो. विजयपाल शास्त्री, प्रो. बनमाली विश्वाल, डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल, डॉ. कृपाशंकर शर्मा, डॉ. आर बालामुरुगन, डॉ. अरविंद गौर, डॉ. सुरेश शर्मा, वीरेंद्र बर्तवाल, शैलेंद्र आदि मौजूद रहे।

06 February 2019
Amar Ujala

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में किए गए 200 शोधपत्र प्रस्तुत

अमर उजाला ब्यूरो

रघुनाथ कीर्ति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग में आयोजित आठ दिवसीय गोष्ठी का समापन

देवप्रयाग। रघुनाथ कीर्ति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग में आयोजित आठ दिवसीय राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी में व्याकरण साहित्य, ज्योतिष व आधुनिक विषयों पर करीब 200 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। जबकि संस्थान की ओर से पहली बार पालि भाषा की ई-पत्रिका पालि संवाद व परिसर की त्रैमासिक पत्रिका श्री रघुनाथ वार्तावली की भी शुरुआत की गयी।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय आठ दिवसीय गोष्ठी का मंगलवार को समापन हो गया। इस मौके पर प्राचार्य प्रो. केबी सुब्बरायुडू ने कहा कि सेमीनार का उद्देश्य देश विदेश के विद्वानों के ज्ञान व शोधकार्यों को उत्तराखंड के जनमानस तक पहुंचाना है। संगोष्ठी के अंतिम सत्र में शोधार्थियों ने उत्तराखंड की लोक परंपरा, साहित्य व इतिहास से जुड़े कई शोधपत्र पढ़े, जिनमें पहाड़ो से पलायन को रोकने व प्राचीन धरोहरों को बचाने दिए गए।

उत्तराखंड संस्कृत अकादमी के निदेशक प्रो. प्रेमचंद शास्त्री ने भारत के प्राचीन ग्रंथों का वैज्ञानिक उपयोग किए जाने की जानकारी दी है। गोष्ठी में पहुंचे राजकीय महाविद्यालय कोटद्वार के प्राचार्य प्रो. सोहनलाल भट्ट ने कहा कि विलुप्त होती लोक संस्कृति व संस्कृत को बचाने के उचित प्रयास होने चाहिए। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रांत प्रमुख पवन कुमार ने कहा कि जनमानस को संस्कृत भाषा के प्रति लगाव होना चाहिए। देव संस्कृति विवि के प्रो. नरेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि शोध की नवीनता ही विषय को महत्वपूर्ण बनाती है। समापन कार्यक्रम में ई-पत्रिका के संपादक प्रो. प्रफुल्ल गड़पाल, डा. वीरेंद्र बर्थवाल, डा. अरविंद गौर, डा. बालमुरगन, डा. मुकेश शर्मा ,डा. शैलेंद्र उनियाल, डा. दिनेश पांडे, डा. अर्चना डिमरी, डा. प्रमोद थपलियाल, डा. अशोक जोशी, डा. धनेंद्र, विनोद पंडित, गार्गी नैनवाल, पंकज कोटियाल व अवधेश बिजल्वाण आदि मौजूद थे।

06/February/2019

Hindustan

रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग में आयोजित हुआ आठ दिवसीय सेमिनार

पलायन रोकने के सुझाव दिए

देवप्रयाग | हमारे संवाददाता

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग में आयोजित आठ दिवसीय राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के समापन पर शोधार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। संस्थान ने परिसर की त्रैमासिक पत्रिका श्री रघुनाथ वार्तावली की भी शुरुआत की।

मंगलवार को श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग में आयोजित आठ दिवसीय सेमिनार में संस्थान के प्राचार्य केबी सुब्बारायडू ने कहा कि सेमीनार का उद्देश्य देश-विदेश के विद्वानों के ज्ञान को शोधार्थियों के माध्यम से प्रदेश के आम जनमानस तक पहुंचाना है। कहा सेमिनार का भरपूर लाभ युवा पीढ़ी को उठाना चाहिए। सेमीनार के अंतिम सत्र में शोधार्थियों ने उत्तराखंड की लोक परम्परा, साहित्य, और इतिहास से जुड़े शोध पत्र पढ़े। जिसमें पहाड़ों से पलायन को रोकने व अतीत की धरोहरों को बचाए रखने को सुझाव भी प्रस्तुत किए।

मंगलवार को देवप्रयाग में आयोजित सेमिनार के समापन पर शोधार्थी को प्रमाण पत्र देते कार्यक्रम में मौजूद लोग। ● हिन्दुस्तान

संस्कृत अकादमी निदेशक प्रो. प्रेमचंद शास्त्री ने कहा कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में मौजूद ज्ञान का आज के वैज्ञानिक युग में भरपूर उपयोग हो सकता है। कहा लोक संस्कृति और संस्कृत भाषा को बचाने के लिए सभी को प्रयास करना चाहिए। संस्थान की ओर से पहली बार पालि भाषा की ई पत्रिका पालि संवाद और परिसर की त्रैमासिक पत्रिका श्री रघुनाथ वार्तावाली की शुरुआत की गई। आठ दिनों तक चले सेमीनार में व्याकरण, ज्योतिष और आधुनिक विषयों पर करीब 200 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। इस मौके पर प्राचार्य सोहनलाल भट्ट, आरएसएस के प्रांत सेवा प्रमुख पवन कुमार, प्रो. नरेंद्र प्रताप सिंह, प्रो. प्रफुल्ल गड़पाल, डॉ. वीरेंद्र बर्थवाल, डॉ. अरविंद गौर, डॉ. बालमुरगन, डॉ. मुकेश शर्मा, डॉ. शैलेंद्र ठनियाल, डॉ. दिनेश पांडे, डॉ. अर्चना डिमरी, डॉ. प्रमोद थपलियाल आदि थे।

वेदमंत्र अनेक बीमारियों को दूर करने में होते हैं सहायक

देवप्रयाग। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में वेद विभाग की ओर से दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न प्रदेशों से पहुंचे विद्वानों ने 24 से अधिक शोधपत्रों का वाचन किया। विद्वानों ने वेदों व धर्मग्रंथों का वैज्ञानिक महत्व समझाते हुए कहा कि वेदमंत्र अनेक बीमारियों को दूर करने में महत्वपूर्ण होते है। मंगलवार को लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली के पौरोहित्य विभागाध्यक्ष प्रो. रामराज उपाध्याय ने दो दिवसीय गोष्ठी का शुभारंभ किया। इस मौके पर विद्वानों ने शोधपत्रों का वाचन करते हुए कहा कि अगर वेदमंत्रों का उच्चारण शुद्ध हो और उसके प्रति सच्ची श्रद्धा रखी जाय तो वेदमंत्र अनेक बीमारियों को दूर करने में मददगार साबित होते है। साथ ही मनुष्य वेदमंत्रों के माध्यम से अनेक समस्याओं से छुटकारा भी पा सकता है। वैज्ञानिक भी वेदमंत्रों की अपार शक्ति, संचार व इच्छा शक्ति का परीक्षण कर रहे है। इसलिए हमें वेदों की इस अमूल्य संपत्ति का सद्पयोग करना चाहिए। संगोष्ठी के पहले दिन हिमाचल, दिल्ली, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों से पहुंचे विद्वानों ने 24 से अधिक शोधपत्रों का वाचन किया। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. केबी सुब्बरायडु ने कहा कि इस प्रकार की संगोष्ठी से शोधार्थियों के साथ ही संस्थान के छात्रों को भी लाभ मिलेगा। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डा. रामानुज उपाध्याय व धर्मानंद राउत थे। जबकि संगोष्ठी में संयोजक डा. शैलेंद्र उनियाल, प्रो. बनमाली विश्वाल, डा. आर बालमुरगन, डा. मुकेश कुमार, डा. अरविंद गौर, डा. वीरेंद्र बत्र्वाल व डा. नितेश द्विवेदी आदि मौजूद रहे। ब्यूरो

(Amar Ujala (Hindi) 20/02/2019)

26/February/2019

Hindustan

मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य है मोक्षः प्रो. महाबलेश्वर

देवप्रयाग | हमारे संवाददाता

श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में आयोजित वेदांत विभाग की राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि अद्वैत वेदांत मनुष्य और परमात्मा एक ही माना जाता है। कहा मृत्य के उपरांत आत्मा परमात्मा में विलय हो जाती है यही जीवन का सत्य है।

सोमवार को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग में आयोजित वेदांत विभाग की ओर से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि राजीव गांधी परिसर श्रृंगेरी के वेदांत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. महाबलेश्वर भट्ट ने किया। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। इसके लिए उसे भक्ति, ध्यान व ज्ञान मार्ग का सहारा लेना चाहिए। कहा कि भारतीय दर्शन में चार पुरुषार्थों में अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष मना गया है।

मोक्ष प्राप्त करना बहुत कठिन नहीं है, बस इसके लिए माया, मोह, तृष्णा आदि बाधाओं को दूर करना पड़ता है। वेद व्यास परिसर हिमाचल के वेदांत विभागध्यक्ष डॉ. भगवान सामंत राय ने कहा कि मनुष्य जीवन में भक्ति, ज्ञान और कर्म आवयक है। परिसर के प्राचार्य प्रो.केबी सुब्बरायुडु ने कहा कि आज के आपाधापी जीवन में अद्वैत वेदांत दर्शन बहुत महत्वपूण और आवश्यक है। कहा अद्वैत वेदांत वास्तव में जीवन के सार को बतलाता है। इसका अध्ययन और उस पर अमल करने वाला व्यक्ति झूठ, आडंबर आदि के फेर में नही फंसता है। इस मौके पर डॉ. वीरेंद्र बर्त्वाल, डॉ. समराजा, डॉ. अजय गांधी, ओम शर्मा, डॉ. शैलेंद्र उनियाल, प्रो. बनमाली विश्वाल, डॉ. आर बालमुरुगन, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. अरविंद गौर, अवधेश बिजल्वाण, विजेंद्र बिष्ट, डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल आदि थे।

सोमवार को रघुनाथ कीर्ति परिसर में संगोष्ठी में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित करते मुख्य अतिथि।

26/February/2019
Amar Ujala

भक्ति, ध्यान और ज्ञान से मिलता है मोक्ष

देवप्रयाग। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में आयोजित वेदांत विभाग की राष्ट्रीय संगोष्ठी में अद्वैतवाद और मोक्ष पर विद्वानों ने चर्चा की। इस असवर पर कहा गया कि मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। इसके लिए उसे भक्ति, ध्यान एवं ज्ञान मार्ग का सहारा लेना चाहिए। भारतीय दर्शन में चार पुरुषार्थों में अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष माना गया है। रविवार को यहां आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि श्री राजीव गांधी परिसर श्रृंगेरी के वेदांत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. महाबलेश्वर भट्ट ने कहा कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए माया, मोह व तृष्णा जैसी बाधाओं को दूर करना पड़ता है।

18/April/2019 Hindustan

रघुनाथ संस्कृत संस्थान ने मनाया वार्षिकोत्सव

देवप्रयाग | हमारे संवाददाता

श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। वार्षिकोत्सव के मौके पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान पाने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

बुधवार को श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग के वार्षिकोत्सव का लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली के प्रो. रमेश चंद्र पांडे ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विशिष्ट अतिथि उत्तराखंड संस्कृत विवि के कुलपति प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी ने कहा कि देवप्रयाग स्थित संस्थान के परिसर का सम्पूर्ण देश में बड़ा महत्व है प्रदेश के युवाओं का भविष्य बनाने में यह संस्थान अहम भूमिका निभाएगा। मौके पर परिसर के प्रचार्य प्रो. केबी सुब्बारायूडु, डॉ. शिव शंकर मौजूद थे।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न देते हुए।

18 | April | 2019 Amar Ujala

ज्योतिष परिषद की उत्तराखंड शाखा गठित

श्रीनगर (ब्यूरो)। राष्ट्रीय ज्योतिष परिषद के स्थापना दिवस पर उत्तराखंड शाखा का गठन किया गया है। इस दौरान शाखा के पदाधिकारियों का, गठन करने के साथ ही ज्योतिष विज्ञान का चिकित्सा के क्षेत्र में महत्व पर चर्चा की गई।

जीएमवीएन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने ज्योतिष शास्त्र के बारे में चर्चा की। मुख्य अतिथि संस्कृत संस्थान देवप्रयाग के ज्योतिष विभाग के विभागाध्यक्ष मुकेश शर्मा व पूर्व पालिकाध्यक्ष कृष्णानंद मैठाणी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। दो सत्रों में आयोजित हुए कार्यक्रम के पहले सत्र में उत्तराखंड शाखा की नई कार्यकारिणी

समारोह में मौजूद ज्योतिषाचार्य।

का गठन किया गया, जिसमें प्रदेश अध्यक्ष आचार्य भाष्करानंद अंथवाल, उपाध्यक्ष डा. रामानंद गैरोला, महासचिव डा. प्रकाश चमोली, संगठन सचिव राकेश थपलियाल, अनिल सिंधवाल व प्रचार सचिव राजीव विश्रोई, नवीन प्रकाश नौटियाल तथा मंडल प्रमुख विपिन डंडरियाल को सर्वसहमती से चुना गया। इसके अलावा जनपद टिहरी से दिनेश जोशी, पौड़ी से सुरेंद्र प्रसाद कुकरेती, रुद्रप्रयाग से गोवर्धन सेमवाल, चमोली से प्रदीप पुरोहित, नैनीताल, अल्मोडा व बागेश्वर से क्रमशः हरीश जोशी, विजय व गोविंद बल्लभ भट्ट को जनपद शाखा प्रमुख की जिम्मेदारी सौंपी गई। हिमालय साहित्य एवं कला परिषद ने कार्यक्रम के संचालन में अपना सहयोग दिया। इस मौके पर वक्ताओं ने उत्तराखंड की ज्योतिष शास्त्र से जुड़ी पुस्तिकाओं को सुरक्षित करने पर भी जोर दिया। दूसरे सत्र में कार्यक्रम में पहुंचे ज्योतिषाचार्यों ने अपने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। साथ ही ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिक उपयोगिता व रोगों के निदान में ज्योतिष के महत्व के बारे में बताया।

3/August/2019

Amar Ujala

प्रतियोगिताओं में छात्र-छात्राओं ने दिखाया अपना हुनर

देवप्रयाग। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में संस्कृत सप्ताह के तहत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की कई, जिसमें जूनियर व प्राथमिक वर्ग के छात्र-छात्राओं के साथ ही शास्त्री आचार्य वर्ग ने भी प्रतिभांग किया। इस मौके पर प्राचार्य केबी सुब्बारायुडु की पुस्तक श्री सद्गुरूमहिमामृतम, व्याकरण विभाग की शोध पुस्तक शाब्दी मिपदगा तथा परिसर की त्रैमासिक पत्रिका श्रीरघुनाथ वार्ता वली का भी विमोचन किया गया। बृहस्पतिवार को आयोजित संस्कृत एकल गायन में संस्कृत संस्थान के ध्रुव जोशी प्रथम, अशोक कुमार द्वितीय व आवेश तीसरे स्थान पर रहे। समूह गान में संस्थान के सुभाष भट्ट पहले, पंतजलि की खुशी दूसरे वा जीआईसी देवप्रयाग की दीक्षा तीसरे स्थान पर रही। जबकि जूनियर वर्ग में पतंजलि गुरुकुल की दीक्षा प्रथम, ज्ञानश्री द्वितीय व खुशी तृतीय रही। इसके अलावा माध्यमिक वर्ग की संस्कृत भाषा प्रतियोगिता में दीपक नौटियाल पहले, मोहित शर्मा दूसरे स्थान पर रहे। श्री मद्भागवत गीता कंठपाठ में दीपक नौटियाल ने प्रथम व अविनाश ने द्वितीय स्थान हासिल किया। श्लोक कंठपाठ में शास्त्री आचार्य वर्ग में संस्थान के श्यामदेव प्रथम, आयुष उनियाल द्वितीय व हिमांशु तृतीय रहे। निबंध लेखन के जूनियर वर्ग में पतंजलि की शुभांगिनी को पहला , अंकिता को दूसरा व ज्योति को तीसरा स्थान मिला। जबकि निबंध लेखन के माध्यमिक वर्ग में रघुनाथ कीर्ति संस्कृत महाविद्यालय के राजीव डोभाल, दीपक नौटियाल व मोहित को क्रमशः पहला, दूसरा व तीसरा स्थान मिला। निबंध लेखन के शास्त्री आचार्य वर्ग में संस्थान के श्यामदेव पहले, संदीप दूसरे और प्रियंका व पुनीत तीसरे स्थान पर रहे। इस मौके पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री 108 स्वामी शरदपुरी महाराज ने प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया। यूरो

Amar Ujala 28/09/15

डॉ. जयंतीप्रसाद को रघुनाथ कीर्ति सम्मान से नवाजा

हिंदी पखवाड़ा

देवप्रयाग | हमारे संवाददाता

श्री रघुनाथ कीर्ति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग में आयोजित हिंदी पखवाड़े का विधिवत समापन हो गया है। इस मौके पर पखवाड़े के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को उच्चशिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत ने पुरस्कृत किया।

हिंदी लेखक डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल को श्री रघुनाथ कीर्ति हिंदी सेवा सम्मान और हिंदी पत्रकारिता के लिये डा. प्रभाकर जोशी और राजेश भट्ट को सम्मानित किया गया। शुक्रवार को देवप्रयाग में आयोजित हिंदी पखवाड़े का समापन मुख्य अतिथि उच्चशिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत ने किया। उन्होंने कहा कि हिंदी पूरे देश को एक सूत्र में बांधने वाली राजभाषा है।

आयोजन

- देवप्रयाग में आयोजित हिंदी पखवाड़े का विधिवत समापन
- विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को किया पुरस्कृत

बताया कि सरकार उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के अधीन करने पर विचार कर रही है। संस्थान में आयोजित पखवाड़े के तहत सात श्रेणियों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें काव्यपाठ में डॉ. बीरेंद्र बर्त्वाल, डॉ. नितेश द्विवेदी व श्रीओम शर्मा, श्रुतलेख में राजेंद्र सिंह, विजयनेत्रिवाल, नवीन कुमार, निबन्ध लेखन वरिष्ठ में प्रवीण चमोली, संदीप कोठारी, देवेश प्रसाद, कनिष्ठ में मोनिका नौगाईं, योगिता अभिनव, हिंदी भाषा सामान्य ज्ञान परीक्षा में संदीप कोठारी, प्रियंका जगूड़ी, प्रवीन चमोली, भाषण स्पर्धा में मोहित शर्मा, मोनिका नौगाईं, पीयूष तिवारी, एकल गायन में धनंजय देवोरी, मोनिका नौगाईं, शोभित भौडियाल, क्रमश प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे।

इस मौके पर विधायक पौड़ी मुकेश कोहली, प्राचार्य प्रो. के वी सुब्बारायुडु, प्रो. घनमाली बिश्वाल, डॉ. वीरेंद्र बर्त्वाल, डॉ. एसपी उनियाल, डॉ. बालमुर्गन, डॉ. शैलेन्द्र उनियाल, डॉ. अरविंद गौर, डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल, डॉ. युवराज, डॉ. नितेश द्विवेदी, अवधेश विजल्वाण, साध्वी देवाश्रिता आदि मौजूद रहे।

28/September/2019

Amar Ujala

उच्च शिक्षा मंत्री ने किया प्रतिभाओं का सम्मान

हिंदी लेखक नौटियाल व हिंदी पत्रकारिता के लिए जोशी व भट्ट को किया सम्मानित

अमर उजाला ब्यूरो

देवप्रयाग। श्री रघुनाथ कीर्ति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग में आयोजित हिंदी पखवाड़े के समापन पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को प्रदेश के उच्चशिक्षा राज्यमंत्री डा. धन सिंह रावत ने पुरस्कृत किया। जबकि हिंदी लेखक डा. जयंती प्रसाद नौटियाल को श्री रघुनाथ कीर्ति हिंदी सेवा सम्मान व हिंदी पत्रकारिता के लिए डा. प्रभाकर जोशी व राजेश भट्ट को सम्मानित किया गया।

शुक्रवार को आयोजित कार्यक्रम में उच्च शिक्षा राज्यमंत्री ने कहा कि हिंदी पूरे देश को एक सूत्र में बांधने वाली राजभाषा है। सभी भारतीय भाषाओं को पढ़ा जाना चाहिए मगर एक देश एक जन व एक भाषा के तौर पर हिंदी को ही स्थान मिलना चाहिए। सरकार उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के अधीन करने पर विचार कर रही है। इस मौके पर मौजूद विधायक पौड़ी मुकेश कोहली ने कहा कि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान का देवप्रयाग में सबसे बड़ा परिसर बनना गर्व की बात है। प्राचार्य प्रो. केवी सुब्बारायुडु ने कहा कि अगले वर्ष राष्ट्रीय संस्थान देवप्रयाग में 24 घंटे संस्कृत चैनल की शुरुआत की जाएगी। डा. वीरेंद्र बड़थ्वाल ने हिंदी पखवाड़े में हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी। डा. नितेश द्विवेदी व डा. दिनेश पांडे ने प्रतियोगिता परिणामों की घोषणा की। कार्यक्रम में श्री रघुनाथ कीर्ति पताका व वार्तावाली पत्रिका का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में शुभांगिनी, जानसी, इशिता, धनंजय देवराडी, नितिन रतूड़ी, विपिन, ध्रुव जोशी की प्रस्तुति आकर्षण का केंद्र रही।

श्रीनगर में वीना राणा का स्वागत करते उच्च शिक्षामंत्री डॉ. धन सिंह रावत व अन्य।

28/September/2019
Hindustan

डॉ. जयंतीप्रसाद को रघुनाथ कीर्ति सम्मान से नवाजा

28 सितम्बर 2019

हिंदी पखवाड़ा

देवप्रयाग | हमारे संवाददाता

श्री रघुनाथ कीर्ति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान देवप्रयाग में आयोजित हिंदी पखवाड़े का विधिवत समापन हो गया है। इस मौके पर पखवाड़े के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को उच्चशिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत ने पुरस्कृत किया।

हिंदी लेखक डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल को श्री रघुनाथ कीर्ति हिंदी सेवा सम्मान और हिंदी पत्रकारिता के लिये डा. प्रभाकर जोशी और राजेश भट्ट को सम्मानित किया गया। शुक्रवार को देवप्रयाग में आयोजित हिंदी पखवाड़े का समापन मुख्य अतिथि उच्चशिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत ने किया। उन्होंने कहा कि हिंदी पूरे देश को एक सूत्र में बांधने वाली राजभाषा है।

आयोजन

- देवप्रयाग में आयोजित हिंदी पखवाड़े का विधिवत समापन
- विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को किया पुरस्कृत

बताया कि सरकार उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के अधीन करने पर विचार कर रही है। संस्थान में आयोजित पखवाड़े के तहत सात श्रेणियों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें काव्यपाठ में डॉ. बीरेंद्र बर्त्तवाल, डॉ. नितेश द्विवेदी व श्रीओम शर्मा, श्रुतलेख में राजेंद्र सिंह, विजयनेत्रिवाल, नवीन कुमार, निबन्ध लेखन वरिष्ठ में प्रवीण चमोली, संदीप कोठारी, देवेश प्रसाद, कनिष्ठ में मोनिका नौगाईं, योगिता अभिनव, हिंदी भाषा सामान्य ज्ञान परीक्षा में संदीप कोठारी, प्रियंका जगूड़ी, प्रवीन चमोली, भाषण स्पर्धा में मोहित शर्मा, मोनिका नौगाईं, पीयूष तिवारी, एकल गायन में धनंजय देवोरी, मोनिका नौगाईं, शोभित नौडियाल, क्रमश प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे।

इस मौके पर विधायक पौड़ी मुकेश कोहली, प्राचार्य प्रो. के वी सुब्बारायुडु, प्रो. वनमाली बिश्वाल, डॉ. वीरेंद्र वर्तवाल, डॉ. एसपी उनियाल, डॉ. वालमुर्गन, डॉ. शैलेन्द्र उनियाल, डॉ. अरविंद गौर, डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल, डॉ. युवराज, डॉ. नितेश द्विवेदी, अवधेश बिजल्वाण, साध्वी देवाश्रिता आदि मौजूद रहे।

18/October/2019
Hindustan

संस्कृत ने भारत को विश्व में दिलाई पहचान: कंडारी

देवप्रयाग | हमारे संवाददाता

प्रतियोगिता

- श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में शास्त्रीय स्पर्धा का शुभारंभ
- छात्रों से की पर्यावरण संरक्षण को आगे आने की अपील

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में दो दिवसीय राज्य स्तरीय शास्त्रीय स्पर्धा की शुरुआत हो गई है। शास्त्रीय स्पर्धा में श्रीमद्भागवत गीता कंठपाठ, अष्टाध्यायी, अमरकोश आदि प्रतियोगिता होंगी।

गुरुवार को रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग में आयोजित राज्यस्तरीय शास्त्रीय स्पर्धा का शुभारंभ विधायक विनोद कंडारी ने किया। उन्होंने कहा कि संस्कृत ने पूरे विश्व में भारत के ज्ञान और बौद्धिकता की पहचान बनाई है। संस्कृत में रोजगार के बहुत अवसर हैं. बशर्ते संस्कृत के छात्र-छात्राएं कड़ा परिश्रम कर पहले अपने आप को स्थापित करें। उन्होंने छात्र-छात्राओं से संस्कृत अध्ययन के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी आगे आने का आह्वान किया। भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार प्राचार्य डॉ. भोला झा ने कहा कि संस्कृत के महत्व को देखते आज बड़ी संख्या में देश विदेश के लोग इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं।

19 अक्टूबर 2019

अष्टाध्यायी कंठपाठ में जयप्रकाश और काव्य कंठपाठ में तेजवीर अव्वल

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की राज्य स्पर्धा संपन्न

अमर उजाला ब्यूरो

देवप्रयाग। संस्कृत साहित्य के संरक्षण और संवर्धन पर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के श्रीरघुनाथ कीर्ति परिसर में आयोजित राज्य स्तरीय शास्त्रीय स्पर्धाओं में छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़कर प्रतिभाग किया। आयोजित अष्टाध्यायी कंठपाठ प्रतियोगिता में जयप्रकाश प्रथम, विश्वमित्र द्वितीय और अंकिता तृतीय रहीं। जबकि काव्य कंठपाठ में तेजवीर आर्य पहले, दीपक कुमार दूसरे व सिमरन कुमारी ने तीसरा स्थान हासिल किया। विजेता छात्र अब राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करेंगे।

राज्य स्तरीय शास्त्रीय स्पर्धाओं में संस्कृत संस्थान, पतंजलि गुरुकुलम, गुरुकुल पौंधा, श्री भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय आदि के करीब 50 छात्र-छात्राएं शमिल हुए। वेदभाष्य भाषण में भरत ने प्रथम और देवेंद्र कुमार ने द्वितीय स्थान पर रहे। वहीं अमरकोष कंठपाठ में जयप्रकाश को पहला और पीयूष तिवाड़ी को दूसरा स्थान मिला। व्याकरण श्लाका में श्यामदेव ने बाजी मारी। भाषण में पुनीत कुमार प्रथम और मोहित उनियाल, धातुरूप कंठपाठ में आकाश पहले, पंकज कुमार जोशी दूसरे व सुनील दत्त और दीक्षा देवी तीसरे और गीता कंठपाठ में वेदभानु प्रथम, अंतिम द्वितीय व दीक्षा तृतीय रहीं। इसके अलावा सांख्ययोग भाषण में राजेश कुमार अव्वल रहे। जबकि धर्मशास्त्र भाषण में ईश्वर ने बाजी मारी। अंत्याक्षरी में अजय प्रथम और ऋतेश द्वितीय, साहित्य श्लाका में कैलाश ने पहला देवेश पंत ने दूसरा और अभिषेक सती ने तीसरा, समस्यापूर्ति स्पर्धा में आकाश प्रथम, भरत कुमार द्वितीय और देवेंद्र आर्य तृतीय रहे। स्फूर्ति स्पर्धा में कालिदास गण के श्यामदेव और संदीप कोठारी ने बाजी मारी। जबकि पाणिनी गण के राजेश कुमार और पंकज कुमार जोशी द्वितीय तथा दंडी गण के देवेंद्र और अनिकेत तीसरे स्थान पर रहे। कार्यक्रम के समापन पर मुख्य अतिथि संस्कृत भारती के प्रताप सिंह ने कहा कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए स्पर्धा बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए छात्रों में संघर्ष और चुनौतियों का सामना करने की शक्ति होनी चाहिए।

Amar Ujala 20/10/2019

19/07/2021

ढ़वाल amarujala.com

संस्कृत के प्रचार-प्रसार पर दिए सुझाव

केंद्रीय संस्कृत विवि की पांचवीं वर्षगांठ पर आयोजित किया गया कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

देवप्रयाग। केंद्रीय संस्कृत विवि के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर की पांचवीं वर्षगांठ पर उत्तराखंड विद्या वैभवम कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें देश व विदेश के मूर्धन्य विद्वानों ने ऑनलाइन प्रतिभाग कर संस्कृत के प्रचार और प्रसार सहित इसके संरक्षण पर अपने सुझाव दिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ कर उत्तराखंड संस्कृत विवि की पूर्व कुलपति प्रो. सुधारानी पांडेय, परिसर के निदेशक प्रो. बनमाली बिश्वाल, पूर्व निदेशक प्रो. सर्वनारायण झा, पालिका अध्यक्ष कृष्णकांत कोटियाल एवं श्री रघुनाथ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेंद्र नारायण कोटियाल ने संस्कृत भाषा के इतिहास और महत्व के बारे में बताया। प्रो. सुधारानी पांडेय ने कहा कि उत्तराखंड एक ऐसा राज्य है जिसकी द्वितीय भाषा संस्कृत है। यहां प्राचीन काल से ही शास्त्रों का अध्ययन और संरक्षण होता रहा है। कालीदास के ग्रंथ कुमार संभव में हिमालय का वर्णन किया गया है। परिसर के पूर्व निदेशक सर्वनारायण झा ने कहा कि उत्तराखंड एक संस्कृति और सद्भाव से युक्त राज्य है। प्राचीन शास्त्रों की रचना इसी धरती पर हुई। इसी कारण इसे देवभूमि कहा गया है। परिसर के वर्तमान निदेशक प्रो. बनमाली बिश्वाल ने कहा कि यहां इतने तीर्थ और मंदिर हैं कि प्रत्येक घर एक मंदिर के समान प्रतीत होता है। दिल्ली से प्रो. दीक्षित ने कहा कि यहां के लोगों में शास्त्रों के प्रति श्रद्धा भाव बहुत अधिक देखने को मिलता है। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रो. वेदप्रकाश उपाध्याय नें परिसर को उत्तराखंड के गौरव का प्रतीक बताया। जर्मन से कार्यक्रम में जुड़े प्रो. सदानंद दास ने बनमाली बिश्वाल के ग्रंथ की सराहना की। इस मौके पर ज्योतिर्मठ संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य, आचार्य रामदयाल मैदुली, सिद्धदात्री पंचाग के पंडित विनोद बिजल्वाण, डॉ. सभापति शर्मा (मेरठ), वेदाचार्य ज्योति प्रसाद उनियाल, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार से प्रो. सोमदेव शतांशु, उत्तराखंड संस्कृत अकादमी हरिद्वार से शोध अधिकारी आदि ने भी विचार रखे।